क्या कभी सोचा था ? 9
बाबा श्याम का फाल्गुनी मेला 11
चित्रमय समाचार 16

राष्ट्रीय विचारों का पाक्षिक ₹10

पाथेय कण

www.patheykan.com
फाल्गुन शु.10, वि.2079, युगाब्द 5124, 1 मार्च, 2023

गाय के माध्यम से बना सकते हैं

ऐसा भारत

जो रोग,कर्ज, प्रदूषण,अपराध और कुपोषण से हो मुक्त

जो अन्न, ऊर्जा और रोजगार से हो युक्त

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

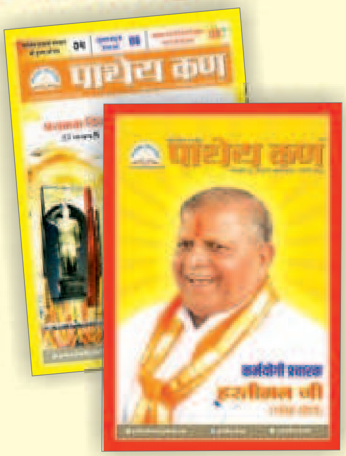

'संपादकीय' ने याद ताजा कर दी

पाथेय कण का 1 फरवरी अंक हस्तीमल जी की जीवन–यात्रा का पाठक को अभिभूत कर देने वाले वृत से आवृत है। 1963 में अग्रवाल कॉलेज, जयपुर में हम दोनों का संघ शिक्षा वर्ग (द्वितीय वर्ष) साथ–साथ हुआ। इस अंक का संपादकीय पढ़कर मुझे पिलानी में हुए एक त्रिदिवसीय कार्यक्रम की याद आ गई, जिसमें मुझे हस्तीमल जी के साथ रहने का अवसर मिला था।

'प्रचारक' पर लिखा संपादकीय खाचरियावास प्रवास की एक विशेष घटना भी याद दिला गया। हम दोनों साथ–साथ भोजन कर रहे थे। पत्नी उन्हें फुल्का और मुझे जौ की रोटी देकर गई। जौ में मोठ और मूंग भी मिले थे। हस्तीमल जी बोले ''यह भेद नहीं चलेगा। मुझे फुल्का क्यों?'' और आग्रहपूर्वक जौ की रोटी ली। मेरी मां उनके भोजन का बहुत ध्यान रखती थी। कहती ''अरे भाया! ऐ सब लोग साधू–महात्मा हैं रै। आंको खास ध्यान राख्या करो।'' उनकी याद सदैव बनी रहती है।

–**श्रीराम शर्मा**, खाचरियावास, सीकर

राष्ट्रभक्ति

16 दिसम्बर के अंक के संपादकीय में दी गई जानकारी इजरायल के निर्माण के समय 'देश की भाषा क्या हो' प्रश्न पर देशवासियों ने हिब्रू भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में चुना जबकि केवल तीन व्यक्ति हिब्रू भाषा के जानकार थे। ऐसी प्रखर राष्ट्रभक्ति के बिना देश का सर्वांगीण उत्थान संभव ही नहीं है। हम सभी भारतवासियों को इजरायल के लोगों से यह सीख लेनी होगी। तभी हमारा लक्ष्य 'परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं' साकार हो सकेगा।

–**तोलाराम लाठ**,बीकानेर

सटीक जानकारी

16 जनवरी के अंक में रायपुर (छत्तीसगढ़) के बस्तर क्षेत्र में मतांतरित ईसाइयों द्वारा हिन्दू आदिवासी बस्ती में घुसकर आगजनी, तोड़फोड़ एवं मारपीट की घटना की सटीक जानकारी मिली। जबकि मीडिया रिपोर्ट में हिंदू आदिवासियों द्वारा मतांतरित ईसाई आदिवासियों की बस्ती में घुसकर आगजनी, तोड़फोड़ एवं मारपीट की गलत जानकारी दी गई है। सही जानकारी के लिए पाथेय कण को साधुवाद।

–**दिनेशचन्द्र मीना**, दौसा

संघर्ष यात्रा पढ़कर अच्छा लगा

1फरवरी का पाथेय कण समय पर मिला। महान कर्मयोगी हस्तीमल जी की संघर्ष यात्रा पढ़कर अच्छा लगा। बाल प्रश्नोत्तरी, बोधकथा एवं अन्य आलेख ज्ञानवर्धक एवं नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं।

–**अमृतलाल आचार्य**, नागौर

समाज सदैव ऋणी रहेगा

मधुर मुस्कान व हास्य के साथ अनुशासन सिखाने, किसी भी काम को बारीकी से करने और कार्यकर्ताओं को प्रयोग द्वारा सिखाकर उन्हें गढ़ने जैसे गुणों के धनी राष्ट्र–साधक हस्तीमल जी कार्यकर्ताओं से सजीव संपर्क रखकर उनकी विशेष चिंता करते थे। आपातकाल में भूमिगत आंदोलन का नेतृत्व करने और पाथेय कण को आत्मनिर्भर बनाने जैसे कार्यों के लिए समाज सदैव आपका ऋणी रहेगा। प्रचारक परंपरा के श्रेष्ठ प्रतिनिधि माने जाने वाले महामानव को मेरा सादर नमन।

–**डॉ.सुलोचना पूनिया**,
Sulochanapoonia1979@gmail.com

ऋषितुल्य

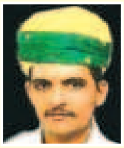

1 फरवरी के अंक में संपादकीय 'संघ के प्रचारक' पढ़ा जिसमें प्रचारकों की प्रेरणादायी जीवन पद्धति की जानकारी मिली। आज के इस भौतिक युग में जहां व्यक्ति स्वयं और परिवार तक सीमित रहता है, वहीं संघ के प्रचारक समस्त भौतिक सुख–सुविधाओं को त्यागकर राष्ट्र धर्म के लिए समर्पित हो जाते हैं। किसी भी तरह के मान–सम्मान, पद–प्रतिष्ठा की अपेक्षा किए बगैर अनवरत अपनी काया को तपाने वाले संघ के प्रचारक निसंदेह ऋषितुल्य होते हैं।

–**बलवंत सिंह**, खाराबेरा, चेन्नई

आदर्श प्रचारक

1 फरवरी के अंक में संघ के वरिष्ठ प्रचारक हस्तीमल जी के निधन का समाचार पढ़ा। इस महान विभूति को महाविद्यालय के छात्रों हेतु आयोजित संघ शिक्षा वर्ग में देखने व सुनने का अवसर खेमीसती मंदिर, झुंझुनू में प्राप्त हुआ। आप एक बार के संपर्क में ही कार्यकर्ता को सदैव के लिए अपना बना लेते थे। सच में संघ के प्रचारक का जीवन त्याग, समर्पण व सादगी का जीवंत उदाहरण होता है। संघ के हजारों प्रचारक बिना किसी प्रदर्शन के शांत, एकाकी भाव से विभिन्न क्षेत्रों में लगे हुए हैं। स्तुत्य है संघ की प्रचारक पद्धति।

– के जी मालव,

निष्ठावान प्रचारक

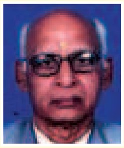

1 फरवरी का पाथेय कण देखा, मालूम हुआ हस्तीमल जी भाईसाहब का देहावसान हो गया। अभी दो महीने पहले उनसे मेरी फोन पर बात भी हुई थी। वे बोले, बेंगलुरु आना होगा तो आपसे जरूर मिलूंगा। लेकिन प्रभु को हमारा मिलना मंजूर नहीं था। हिंदू समाज की आजीवन सेवा करने वाले ऐसे निष्ठावान प्रचारक हस्तीमल जी भाईसाहब को मेरी अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि।

–**भगवानसहाय मिश्र**, सरदारशहर, चूरू

पाथेय कण पोर्टल पर पढ़ें

(दिए गए लिंक पर क्लिक करें)

- परतें खोलती फिल्म : लॉस्ट (2023)
  https://patheykan.com/?p=19296
- गिरनार (जूनागढ़) का अनोखा महाशिवरात्रि मेला
  https://patheykan.com/?p=19361
- अकबर भी खिलजी से कम नहीं था
  https://patheykan.com/?p=19389

पाक्षिक
पाथेय कण

फाल्गुन शुक्ल 10 से
चैत्र कृष्ण 8 तक
विक्रम संवत् 2079,
युगाब्द 5124

1-15 मार्च, 2023
वर्ष : 38
अंक : 22

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

सहयोग
संजय सुरोलिया

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹150/-
पन्द्रह वर्ष ₹1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन'
4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-17 (राज.)

पाथेय कण प्राप्त नहीं होने पर व्हाट्सएप करें अथवा फोन करें।
(प्रात:10 से सायं 5 बजे तक)
7976582011
विज्ञापन हेतु सम्पर्क
ओमप्रकाश
9929722111

E-mail
patheykan@gmail.com
Website
www.patheykan.in

झुंझुनू के एक छोटे से गांव ने दिखाया मार्ग

दैनिक भास्कर के 16 फरवरी, 2023 के अंक में एक छोटा सा समाचार एक कोने में छपा था 'शादी के बाद नवदंपती ने देवी-देवताओं की तरह शहीदों को नमन किया।' समाचार में बताया गया था कि उदयपुरवाटी (झुंझुनू) के गांव इंद्रपुरा में दूल्हा-दुल्हन ने गांव में प्रवेश करते ही सबसे पहले देश की रक्षा करने में बलिदान हुए दो बलिदानियों के स्मारक पर जाकर शीश नवाया और श्रद्धासुमन अर्पित किए।

क्या यह समाचार पूरे समाज को कोई प्रेरणा दे रहा है? देश की स्वतंत्रता के लिए अनगिनत देशभक्त बलिदान हुए। स्वाधीन होने के बाद इसकी रक्षा करने के लिए भी बड़ी संख्या में वीर जवानों ने बलिदान दिया है परन्तु हम कृतघ्न लोगों ने उन्हें भुला दिया।

कवि जगदंबा प्रसाद मिश्र 'हितैषी' ने लिखा है-

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा।।

परंतु शहीदों-बलिदानियों की चिताओं पर मेले नहीं लगे। हमें तो अपने गांव-क्षेत्र के बलिदानियों के नाम और उनके विवरण तक की जानकारी नहीं है। उनका स्मारक बनाने की बात कौन कहे!

देश को स्वतंत्र कराने के लिए 1857 से ही अंग्रेजों के विरुद्ध कई प्रकार के संघर्ष किए गए। कई बार सशस्त्र संघर्ष भी हुए, जिनमें कितने ही भारत माँ के लाल अंग्रेजों की पुलिस की गोली से बलिदान हुए तो बहुतों को फांसी पर चढ़ा दिया गया। 1920-22 के असहयोग आंदोलन में भी गोरखपुर के चौरी-चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने अंग्रेजों की पुलिस से संघर्ष किया, 19 लोगों को फांसी दी गई थी। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में तो लोगों ने स्थान-स्थान पर अंग्रेजों के विरुद्ध मोर्चा संभाल लिया था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 940 लोग इस आंदोलन में बलिदान हो गए थे। 1630 घायल हुए।

अभी हाल ही में 'डिक्शनरी ऑफ मार्टर्स' (बलिदानियों का शब्दकोष) के कुल 5 खंड प्रकाशित हुए हैं। प्रधानमंत्री मोदी ने इसका विमोचन 2019 में किया था। इस ग्रंथ में 1857 से 1947 तक देश की स्वतंत्रता के लिए बलिदान हो गए 13 हजार 500 बलिदानियों का विवरण संकलित किया गया है। ये बलिदानी देश के हर कोने से थे। क्या हमें उनकी जानकारी है? पाठ्यपुस्तकों में भी इसकी चर्चा नहीं की गई। वर्तमान केन्द्र सरकार द्वारा 2021 में देश के पहले राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का निर्माण कराया गया है। वहां देश स्वाधीन होने के बाद देश की रक्षा के लिए बलिदान हो गए 25 हजार से ज्यादा सैनिकों के नाम लिखे गए हैं।

इन लोगों ने अपना भविष्य हमारे भविष्य के लिए बलिदान कर दिया। इन बलिदानियों को याद रखना, इनके चरणों में शीश नवाना क्या हमारा कर्तव्य नहीं है? इसीलिए कवि ने बलिदानियों की चिता-स्थलों पर मेले लगने की बात की। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'झाँसी की रानी' में लिखा है-

इस स्वतंत्रता-महायज्ञ में कई वीरवर आए काम।
भारत के इतिहास-गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।।

जब इतिहास में उनके नामों का उल्लेख तक नहीं होगा, हम उनके बारे में जानते तक नहीं होंगे, तो उनके नाम अमर कैसे रहेंगे? राजस्थान के उदयपुरवाटी के एक गांव में नवदंपती ने जो उदाहरण हमारे सामने रखा, गांव में प्रवेश से पहले गांव के बलिदानियों के स्मारक पर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि देने का, क्या ऐसा हर गांव में हो सकता है? क्या हर नवदंपती ऐसा कर सकते हैं?

क्या इसके लिए गांव-गांव में समिति बन सकती है? गांव या क्षेत्र में जो बलिदान हुए हैं उनके बारे में जानकारी इकट्ठी कर उनका स्मारक बनाया जा सकता है क्या? जैसे दूल्हा-दुल्हन ग्राम देवता व कुल देवता की पूजा करते हैं, वैसे ही गांव के बलिदानियों के आगे भी शीश नवाने की परंपरा आरंभ की जा सकती है क्या?

यदि हम ऐसा कर पाए तो कुछ ही वर्षों में एक सकारात्मक परिवर्तन हमें दिखाई देगा। देश की युवा पीढ़ी को भी समझ में आएगा कि देश की स्वाधीनता 'बिना खड्ग और बिना ढाल' के नहीं मिली है। इसके लिए बहुत बलिदान दिया गया है। इससे स्वतंत्रता को बनाए रखने और बलिदानियों के सपनों को पूरा करने के लिए नई पीढ़ी आगे आकर अपना सर्वोत्तम योगदान करने के लिए अवश्य प्रेरित होगी। ●

- रामस्वरूप अग्रवाल

गाय के माध्यम से बना सकते हैं

ऐसा भारत जो रोग, कर्ज, प्रदूषण, अपराध और कुपोषण से हो मुक्त ऐसा भारत जो अन्न, ऊर्जा और रोजगार से हो युक्त

गो सेवा के अखिल भारतीय पालक अधिकारी से संपादक की बातचीत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा गो सेवा नाम से एक गतिविधि चलाई जा रही है। इस गतिविधि के माध्यम से देशभर में क्या कुछ किया जा रहा है? क्या गौशालाएं स्वावलम्बी हो सकती हैं? आखिर भारतीय संस्कृति में क्यों है गाय का इतना महत्व? गाय दुधारू न हो तो भी किसान के लिए उपयोगी हो सकती है क्या? इन सब प्रश्नों पर पाथेय कण के संपादक ने अखिल भारतीय गो सेवा कार्य के पालक का दायित्व संभाल रहे वरिष्ठ प्रचारक श्रीमान् शंकरलाल जी से बातचीत की।

संपादक– गो सेवा गतिविधि का कार्य कब से चल रहा है?

शंकर जी– राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने 2003 से गो सेवा गतिविधि प्रारंभ की थी।

संपादक– इस गतिविधि के अंतर्गत क्या-क्या कार्य किए जाते हैं?

शंकर जी– इस गतिविधि के अंतर्गत 18 प्रकार के कार्य चल रहे हैं।

(1) गोपालन एवं गौ संवर्धन– गाय को क्या खिलाना, कैसे रखना, उसका आवास कैसा हो तथा गाय का संवर्धन कर दूध कैसे बढ़ाना और नस्ल सुधारना आदि कार्य इसमें शामिल हैं।

(2) गाय की चिकित्सा – सस्ते में गाय का इलाज कैसे हो? इसके लिए देशी पद्धति से, आयुर्वेद व होम्योपैथी से चिकित्सा। ऐलोपैथी में जहां 100 रु. लगते हैं, वही इलाज देशी पद्धति द्वारा 10 रु. में हो सकता है। 'लम्पी' बीमारी में एलोवेरा और हल्दी से हजारों गायों की सस्ते में सफल चिकित्सा की गई।

गाय के गोबर से तैयार होती बायोगैस

(3) गौ आधारित खेती– खाद, बीज, दवा सब विदेशी होने से किसान का खर्च बढ़ गया है। डीएपी खाद 50 किग्रा 4,400 रुपयों का आता है। सरकार इसमें 2,800 रुपयों की सब्सिडी देती है। यही खाद गोबर से 600 रुपये में बन जाती है। परिणाम भी अच्छे हैं। विदेशी पेस्टीसाइड (कीटनाशक) की जगह गोमूत्र से बना पेस्टकंट्रोल (कीटनियंत्रक) ज्यादा उपयोगी व सस्ता है।

बैलों से चलने वाला स्वचालित ट्रैक्टर बनाया गया है। इसमें किसान को न पैदल चलना पड़ता है और न ही हाथ से खाद-बीज डालना पड़ता है। पांच एकड़ की खेती दो बैलों से हो जाती है।

(4) गौ ऊर्जा– गोबर गैस से पूरे गांव को बिजली और वाहनों के लिए बायोगैस तैयार होती है। एक किलो बायोगैस से वाहन 40 किमी चलते हैं। 200 की जगह मात्र 60-61 रुपये ही खर्च होते हैं तथा प्रदूषण भी कम होता है।

(5) गौ उत्पाद– वर्तमान में 300 प्रकार के गौ उत्पाद बनाए जा रहे हैं। गोबर से दीपक, गणेश-लक्ष्मी, गौ कास्ठ और फिनाइल बना रहे हैं। गोबर से बनाई चिप द्वारा मोबाइल का रेडिएशन हमारे सिर में ट्यूमर नहीं करता। इसका पेटेंट हमें मिल चुका है। भोपाल गैस कांड में 15 हजार लोग मरे तथा 30 लाख घायल हुए परन्तु जिनके घर गोबर से लिपे हुए थे या जिनके घर गाय थी, वे बच गए।

श्रीमान् शंकरलाल जी ने संघ की प्रचारक परम्परा के अनुसार अविवाहित रहकर अपना संपूर्ण जीवन समाज को संगठित करने और सबल बनाने में लगाया है। राजस्थान के नीमकाथाना में जन्मे शंकरलाल जी 1964 से यानि पिछले 58 वर्षों से निरंतर प्रचारक के नाते राष्ट्र साधना में संलग्न हैं। राजस्थान में जिला, विभाग, प्रांत प्रचारक एवं क्षेत्र प्रचारक का दायित्व संभालने के बाद आप 2007 से 2021 तक अ.भा.गो सेवा प्रमुख व संयोजक रहे। वर्तमान में गो सेवा कार्य के पालक अधिकारी के नाते संपूर्ण देश में प्रवास कर गो सेवा कार्य का मार्गदर्शन करते हैं। आपका केन्द्र अहमदाबाद है।

(6) मनुष्य का इलाज– मस्तिष्क संबंधी बीमारियों में, जैसे कि माइग्रेन, खर्राटे, साइनस, नींद न आना, पैरालिसिस, डिप्रेशन, पागलपन, कान का पर्दा फटना के साथ ही भूख न लगना, एलर्जी, आंख की ज्योति कम होना आदि में गाय

का घी बहुत उपयोगी है। पंचगव्य चिकित्सा में गोबर, गोमूत्र, घी, दूध, छाछ काम में आते हैं। पेट के रोग भी ठीक होते हैं।

(7) मार्केटिंग– अर्थात् गो उत्पादों को बेचने के लिए व्यवस्था करना।

(8) गौ रक्षा– बजरंग दल, विहिप और समाज के लोग मिलकर यह कार्य करते हैं।

(9) गोचर भूमि संरक्षण– 2011 के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयानुसार गोचर भूमि को बेचना, उसका टाइटल बदलना, उस पर कब्जा या स्थायी निर्माण गैर कानूनी है। फिर भी अतिक्रमण हो रहे हैं। गाय गोचर भूमि व जंगल में चर कर ही बचेगी।

(10) गौ कथा– कई संत–साध्वी और कार्यकर्ता इसके माध्यम से गाय के प्रति श्रद्धा जगाने में लगे हैं।

(11) गौ विज्ञान परीक्षा– चार वर्ष पूर्व हुई ऐसी परीक्षा में राजस्थान में चार लाख विद्यार्थी बैठे थे। देश भर में हुई थी यह परीक्षा। आगे भी होती रहेगी।

गाय के गोबर से बनी कलाकृतियाँ

(12) गौ–अभयारण्य स्थापना– बेसहारा गाय, नंदी आदि को सरकार एक जगह लाकर अभयारण्य बनाए। उनके गोबर व गोमूत्र से खेती करने के लिए बिजली व अन्य उत्पाद बनाए। मध्य प्रदेश में उज्जैन के पास ऐसा अभयारण्य बना है।

(13) जेलों में गौशाला– मध्य प्रदेश की 17 जेलों में गौशालाएं चल रही हैं। अच्छे अनुभव आए हैं। छत्तीसगढ़ और गुजरात की कई जेलों में भी हैं गौशालाएं।

(14) प्रशिक्षण केन्द्र – गोपालन की नवीनतम प्रविधियों के बारे में गोपालकों को प्रशिक्षण उपलब्ध कराना।

(15) प्रयोगशालाएं– जहां उत्पाद को बेचने से पूर्व गुणवत्ता की जांच हो सके।

(16) स्वावलम्बी कामधेनु नगर– शहरों की बड़ी कॉलोनियों में पार्किंग के साथ गौशाला बनाना। साथ ही कुछ जमीन पर सब्जी व बगीचा लगाना। एक ही परिसर में चिकित्सालय, यज्ञशाला, शॉपिंग सेंटर, विद्यालय आदि बनें।

(17) स्वावलम्बी गोकुल–गुरुकुल– मध्यप्रदेश के बैतूल में वनवासी विद्यार्थियों के लिए बने भारत–भारती विद्यालय में 500 बच्चे पढ़ रहे हैं। वहां अच्छी गौशाला है। उसी के गोबर– गोमूत्र से खेती होती है। वहां कृषि का 12वीं तक का विद्यालय है। पंचगव्य से बालकों की चिकित्सा होती है।

(18) स्वावलम्बी सुरभि ग्राम संकुल– 10 गांवों का एक संकुल। प्रत्येक गांव के कम से कम 20 घरों में 5–5 गायें हों। बीच में एक मंदिर बने तो ऐसे 10 गांवों में एक हजार गायें होंगी। ऐसे गांवों को गो उत्पाद विपणन हेतु पास के शहर से जोड़ना। महाराष्ट्र के सम्भाजी नगर में यह प्रयोग हुआ है। पूरे शहर को शुद्ध चीजें मिल रही हैं और गांव वालों को अच्छा पैसा।

इन 18 बिन्दुओं को लेकर काम हो रहा है।

संपादक– आपने बताया कि खेती–किसान के लिए भी आप काम कर रहे हैं, ऐसे कुछ आंकड़े हैं क्या अपने पास? किसानों ने किस सीमा तक इसको अपनाया है?

गौ संवर्धन के विविध आयाम

- गोपालन एवं गौ संवर्धन
- गाय की चिकित्सा
- गौ आधारित खेती
- गौ ऊर्जा
- गौ उत्पाद
- मनुष्य का इलाज
- मार्केटिंग
- गौ रक्षा
- गोचर भूमि संरक्षण
- गौ कथा
- गौ विज्ञान परीक्षा
- गौ अभयारण्य
- जेलों में गौशाला
- प्रशिक्षण केन्द्र
- प्रयोगशालाएं
- स्वावलम्बी कामधेनु नगर
- स्वावलम्बी गोकुल–गुरुकुल
- स्वावलम्बी सुरभि ग्राम संकुल

शंकर जी– मध्यप्रदेश में 6 हजार किसानों को गोबर से बनी डीएपी खाद दे रहे हैं। सुदर्शन नाम से एक किट दे रहे हैं। एक भीम टॉनिक दे रहे हैं और उसके द्वारा उनके जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है। ऐसे देश भर में कई हजार किसान इससे जुड़े हैं जो गौ आधारित खेती को अपना रहे हैं।

संपादक– वाहन में जो गैस का प्रयोग किया उसे क्या लोगों ने अपनाना प्रारंभ कर दिया है?

शंकर जी– हिमाचल प्रदेश के पालनपुर में सरकार ने इस प्रकार का एक केन्द्र बनाया है। वहां 61 रुपये किलो में गैस उपलब्ध है। ऐसे ही बड़ौदा में डॉ. भरतभाई पटेल हैं जिन्होंने इस प्रकार का कारखाना लगाया है। 7 हजार किलो गैस रोज देते हैं। अभी तीसरा बनारस में इस प्रकार का केन्द्र बना है। आगे जाकर देशभर में ऐसे केन्द्र और बनने वाले हैं। सरकार का पेट्रोल–डीजल का खर्चा कम होगा। प्रदूषण भी कम होगा।

संपादक– कामधेनु नगर की शुरुआत हो गई है क्या?

शंकर जी– प्रयास किया है। कोलकाता में एक जगह जमीन खरीदी गई है। अभी इस दिशा में काम होना है।

गाय के गोबर से बनी गोकाष्ठ

संपादक– शासन–प्रशासन का क्या सहयोग रहता है?

शंकर जी– सरकारी तंत्र से बहुत अपेक्षा नहीं है। फिर भी, जहां ठीक मानसिकता वाले लोग हैं उनका पूरा सहयोग मिलता है। हम तो अपने बल पर ही अधिक प्रयास करते हैं। अब हम हर प्रांत में एक प्रशिक्षण केन्द्र बना रहे हैं। गोपालन में नव प्रवर्तनों को पहले वहां दिखाना और हर महीने प्रशिक्षण करना।

संपादक– गौ शालाओं को चलाने के लिए सामान्यतः यह धारणा है कि पर्याप्त धन चाहिए. फिर भी गौशालाएं ठीक नहीं चलती हैं। गौशालाएं आत्मनिर्भर बने इसके लिए अपनी कोई योजना है क्या?

शंकर जी– बिल्कुल है। गौशालाएं आत्मनिर्भर बन सकती हैं। सबसे बड़ा काम तो गौशालावाले यह करें कि मरने के बाद अपनी गौशाला की गाय किसी को नहीं दे। उससे तीन प्रकार की खाद बनती है– समाधि खाद, सिलिका खाद और सींग खाद। जो जमीन पांच–दस–पन्द्रह साल से बंजर पड़ी है, उसमें यह समाधि खाद डालकर के एक एकड़ में एक गाय का खाद, जिससे वो जमीन हरी–भरी हो जायेगी। दस साल उसका प्रभाव रहेगा। दूसरी सिलिका खाद वो चकमक पत्थर व गोबर से बनती है और सींग खाद, एक गाय के दो सींग से कई एकड़ की खेती हो सकती है। 20 प्रतिशत उत्पादन बढ़ सकता है। तो कम से कम 25 लाख रुपया एक किसान या गौशाला, एक गाय से कमा सकता है। इस प्रकार से गौ उत्पाद एवं खाद तैयार करने पर गौशाला के लिए धन हेतु कहीं जाने की जरूरत नहीं है।

संपादक– कई राज्यों में गौ हत्या पर प्रतिबंध लगाने के कानून बने है। क्या आप इन कानूनी प्रावधानों से संतुष्ट हैं? या फिर. इनमें कुछ संशोधन होना चाहिए?

शंकर जी– कुछ मामलों में संशोधन की जरूरत है, पर सबसे बड़ी बात है कि जब तक समाज जागृत नहीं होगा, किसान को गाय का मूल्य तब तक समझ में नहीं आएगा और वो गाय छोड़ना बंद नहीं करेगा, सरकारें बहुत कुछ नहीं कर सकती। उत्तर प्रदेश सरकार ने बहुत बड़ा कानून बनाया। पर किसान ने दूध निकाला और गाय को छोड़ दिया, बछड़े को छोड़ दिया। वो बाहर जा भी नहीं सकते और उनकी फसल को खराब करते हैं। इसलिए किसान को समझाना पड़ेगा और प्राइवेट क्षेत्र में जो एनजीओ (स्वयंसेवी संस्थाएं) हैं वे उस काम को अपने हाथ में लें। सड़कों पर घूमने वाली गायों के गोबर व गोमूत्र का उपयोग करेंगे, तो ही समस्या दूर होगी। कानून समस्या का समाधान नहीं है।

संपादक– गांव में घर को गोबर–मिट्टी से लीपकर के शुद्ध किया जाता था. गोबर–गोमूत्र के प्रति एक अच्छा भाव था। आज की जो पीढ़ी आ रही है. उस नौजवान पीढ़ी के मन में गोबर व गोमूत्र के प्रति अच्छा भाव नहीं है। वे उसे हेय दृष्टि से देखते हैं। इस बारे में आपका क्या कहना है?

गोमूत्र से तैयार औषधि

शंकर जी– गोबर मल है तथा गोमूत्र पेशाब है, यह उनके मन में बिठा दिया गया है। गोबर मल नहीं है। इसमें लक्ष्मी का निवास है और गोमूत्र, यह पेशाब नहीं है उसमें गंगा का निवास है। मनुष्य अनेक बीमारी जैसे जिनको स्लिपडिस्क है, सरवाईकल है,

समाधि खाद निर्माण विधि

गाय की मृत्यु होने पर उसका चमड़ा उतारने के लिए किसी को न दें। उसे अपने खेत में ही समाधि दे दें। पांच फुट लम्बा, चार फुट चौड़ा, चार फुट गहरा गड्डा खोदें, इसमें 4 इंच गीला गोबर बिछा दें फिर 20 किलो मोटा नमक डाल दें। गो माता को गड्डे में सुला दें, ऊपर से 30 किलो मोटा नमक डाल दें, फिर एक फुट तक गीला गोबर बिछा दें, फिर मिट्टी डालकर गड्डा बंद कर दें उसमें पानी नहीं जाना चाहिए, शरीर गलना चाहिए, सड़ना नहीं। साल भर बाद उस गड्डे को खोद कर खाद निकाल लें। सुगन्धित खाद निकलेगा। सब कुछ गल चुका होगा। कुछ हड्डियां व सींग बचेंगे। उन्हें अलग कर लें।

बाद में खाद को वर्षा होने पर या खेत में पानी देकर एक एकड़ में बिखेर दें, यह खाद बंजर भूमि को भी उपजाऊ बना देगा। फलदार वृक्षों में डालने पर बहुत अधिक फल प्राप्त होंगे। दस साल तक इसका प्रभाव रहेगा।

श्रीराम गौशाला का अनुभव

बांगरोद (रतलाम–मध्यप्रदेश) की श्रीराम गौशाला द्वारा तैयार की गई समाधि खाद का परीक्षण कराया गया था। इसमें नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, कैल्शियम, सोडियम क्लोराइड, मैग्नेशियम, पोटाश, कॉपर, जिंक, क्रिएटीनिन के साथ यूरिक एसिड की मात्रा पाई गई, जो भूमि को उर्वरकता प्रदान करने में उत्तम जैविक खाद है। इसका श्रीराम गौशाला के परिसर में मक्का, बाजरी, ज्वार आदि फसल पर परीक्षण किया गया। वर्तमान में 100 किसानों द्वारा 500 एकड़ कृषि भूमि में इसका उपयोग किया जा चुका है। 2015 से बायो पोषक खाद के नाम से न्यूनतम शुल्क में खाद बेची जा रही है। उद्यान में आम, आंवला, जामफल, कटहल के पौधे व फूलों की खेती के साथ मिर्च, टमाटर, गोभी, लहसुन, प्याज, आलू, गराडू, खीरा, गेहूं, चना आदि पर इसके सफल परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। इसमें डीएपी यूरिया व अन्य खाद की अपेक्षा बेहतर जैविक विकल्प मिल रहा है।

गाय से बना सकते हैं-

- रोग मुक्त भारत
- कर्ज मुक्त भारत
- प्रदूषण मुक्त भारत
- अपराध मुक्त भारत
- कुपोषण मुक्त भारत
- नशा मुक्त भारत

तथा

- अन्न युक्त भारत
- ऊर्जा युक्त भारत
- रोजगार युक्त भारत

स्पॉन्डिलाइटिस है, वो लाखों रुपये लगाकर भी ठीक नहीं होते हैं, थोड़े से गोबर–गोमूत्र से उक्त बीमारियों का इलाज हो सकता है। गोमूत्र से कैंसर का इलाज भी संभव है। यह सब नौजवानों को बताना चाहिए।

संपादक– क्या आप यह मानते हैं कि विद्यालयों के पाठ्यक्रम में इस संबंध में कुछ सामग्री जोड़ी जानी चाहिए?

शंकर जी– निश्चित रूप से जोड़ी जानी चाहिए। छोटी कक्षा से ही उन्हें यह सब पढ़ाया जाना चाहिए। गाय हमारी मां है, पशु नहीं है। क्योंकि वह मां के सदृश हमारा सब प्रकार से पालन–पोषण करने में सक्षम है। वो हमारे जीवन में कैसे परिवर्तन कर सकती है, उसके लिए हमने नौ बिंदु जोड़े हैं– जिनके द्वारा ऐसे समाज को हम स्वावलम्बी, सुखी–सम्पन्न बना सकते हैं। गाय के द्वारा 1. रोग मुक्त भारत 2. कर्ज मुक्त भारत 3. प्रदूषण मुक्त भारत 4. अपराध मुक्त भारत 5. कुपोषण मुक्त भारत 6. नशा मुक्त भारत 7. अन्न युक्त भारत 8. ऊर्जा युक्त भारत व 9. रोजगार युक्त भारत बना सकते हैं। हम बहुत बड़ी क्रांति देश में देशी गाय के द्वारा ला सकते हैं।

गाय के गोबर से तैयार गमले

गाय के गोबर आधारित 'विकिरण ऊर्जा से बचाव की चिप' संबंधी आविष्कार के लिए भारत सरकार से प्राप्त पेटेंट–सर्टिफिकेट (दि. 21.10.2022)

INTELLECTUAL PROPERTY INDIA

क्रमांक / SL No :

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
पेटेंट कार्यालय
THE PATENT OFFICE
पेटेंट प्रमाणपत्र
PATENT CERTIFICATE

पेटेंट सं. / Patent No.	:	409652
आवेदन सं. / Application No.	:	201621024492
फाइल करने की तारीख / Date of Filing	:	18/07/2016
पेटेंटी / Patentee	:	MR. MANOJ PURUSHOTTAMBHAI SOLANKI

It is hereby certified that a patent has been granted to the patentee for an invention entitled COW DUNG BASED RADIATION AND ENERGY MASKING CHIP as disclosed in the above mentioned application for the term of 20 years from the 18th day of July 2016 in accordance with the provisions of the Patents Act, 1970.

अनुदान की तारीख / Date of Grant : 21/10/2022

Controller of Patent

सन् 1947 में देश का विभाजन हुआ उस समय कहते हैं कि लगभग 60 करोड़ गो धन था। जनसंख्या थी 35 करोड़। आज हमारी जनसंख्या 140 करोड़ है और देशी गो धन बचा है 14 करोड़। तब घर–घर में गाय थी। उस समय इतने हॉस्पिटल और डॉक्टर नहीं थे। इतने पुलिस थाने नहीं थे, अपराध बहुत कम थे।

संपादक– जैसा कि आप बता रहे हैं गाय के गोबर और गोमूत्र का बहुत उपयोग है। व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है, समाज में बड़ी क्रांति हो सकती है। इन सब पर कुछ पाठ्यक्रम बनाकर, कुछ पुस्तकें लिखवाकर शिक्षा विभाग को दी जाए व उनसे निवेदन किया जाए, ऐसा कुछ काम हुआ है क्या?

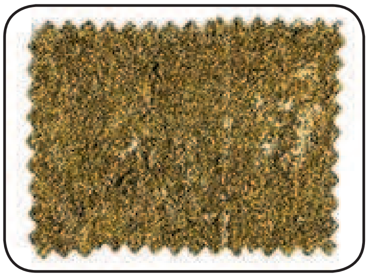

मोबाइल रेडिएशन को कम करने वाली गाय के गोबर से तैयार चिप

शंकर जी–लोग चाहेंगे तो हमारे पास पाठ्यक्रम तैयार है। हम उनको दे सकते हैं। छोटी कक्षा से लेकर पीजी तक। ●

(अधिक जानकारी के लिए सीकर के श्री नवरंग शर्मा, राजस्थान क्षेत्र गो सेवा संयोजक से संपर्क कर सकते हैं। मो.9799490605)

वर्ष प्रतिपदा

भारतीय काल गणना के अनुसार इस बार की वर्ष-प्रतिपदा (चैत्र शुक्ल एकम्) से हम कलियुग के 5125 वें वर्ष में प्रवेश करेंगे। यह कलियुग संवत् ही युगाब्द है। वर्ष प्रतिपदा (इस बार 22 मार्च) से युगाब्द 5125 और विक्रमी 2080 के साथ भारत में कई प्रचलित संवतों का भी शुभारम्भ हो जायेगा। चैत्र शुक्ल एकम् अर्थात् जिसे वर्ष प्रतिपदा, नव-संवत्सर, हिंदू नववर्ष व भारतीय नववर्ष भी कहते हैं।

वर्ष प्रतिपदा अर्थात् नववर्ष का प्रथम दिवस प्रत्येक भारतीय के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इस पावन दिवस से कई राष्ट्रीय प्रसंगों की स्मृतियां भी जुड़ी हुई हैं। अब भारतीय समाज में वर्ष प्रतिपदा के अवसर को बड़ी धूम-धाम से मनाया व स्वीकारा जाने लगा है। देशभर में स्थान-स्थान पर नववर्ष के अनेक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

अन्य नामों से भी प्रचलित है भारतीय नववर्ष दिन

कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश में युगादि (उगादि), कोंकणी सम्प्रदाय- संवत्सर पड़वो, कश्मीर में नवरेह, मणिपुर में सजिबु नोंगमा पानबा, महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, पश्चिम बंगाल व बांग्लादेश में पोहेला बैसाखी आदि नामों से लोकप्रिय है हमारा भारतीय नववर्ष दिन।

कैसे मनाएं नववर्ष

- घरों पर भगवा पताका फहराकर
- परस्पर एक-दूसरे को शुभकामनाएं देकर
- झंडे, बैनर व पोस्टर के माध्यम से अधिक से अधिक प्रचार करके
- घरों के द्वार पर आम व अशोक के पत्तों की वंदनवार लगाकर
- घर के पूजा स्थल पर रंगोली व फूल सजाकर
- गली-मोहल्लों में गोष्ठी, चर्चा व अन्य कार्यक्रम करके
- स्कूल-कॉलेजों व संस्कार केन्द्रों पर महापुरूषों व भारतीय संस्कृति से संबंधित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम करके।
- सर्व समाज के साथ वाहन रैली, कलश यात्रा व शोभायात्रा निकाल कर
- चिकित्सालय में रक्तदान तथा गौशाला में सेवा कार्य करके।

क्यों है इस दिन का विशेष महत्व

- सिख गुरु परंपरा में द्वितीय गुरु अंगददेव जी का जन्मदिवस
- सिंधी समाज के आराध्य भगवान झुलेलाल का जन्मदिवस
- त्रेतायुग में भगवान राम का अयोध्या में राज्याभिषेक
- द्वापर युग में धर्मराज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक
- स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य समाज की स्थापना
- महाराजा विक्रमादित्य द्वारा शक, हूण, यवनों को परास्त कर श्रेष्ठ साम्राज्य की स्थापना कर विक्रम संवत का प्रारम्भ
- राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ.हेडगेवार का जन्मदिवस
- शक्ति-भक्ति के 9 दिन अर्थात् बासंती नवरात्र का पहला दिन
- ज्योतिष शास्त्र में ग्रह-नक्षत्र, तिथि, दिवस व पक्ष आदि की गणना इसी दिन से प्रारम्भ होती है।
- ब्रह्मपुराण के अनुसार सृष्टि का प्रारंभ इसी दिन से माना गया है।

जन्मदिवस (चैत्र शु.1, इस बार 22 मार्च) पर विशेष

डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार

कहा जाता है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए उसके संस्थापक डॉ.हेडगेवार का जीवन देख लें- संघ समझ में आ जाएगा। कैसा था डॉक्टर जी का जीवन? देखते हैं उनके जीवन के कुछ प्रसंग-

एक : एक गरीब परिवार में जन्में डॉ. हेडगेवार यानि तब के केशव जब उम्र के आठवें वर्ष में पहुँचे तब इंग्लैण्ड की महारानी के साठ वर्ष पूर्ण होने पर विद्यालय में बच्चों को मिठाई बांटी गई। केशव के मन में विचार आया कि भारत में इंग्लैंड की रानी का राज्य तो पराया है। ऐसे में यह मिठाई खाना लज्जा की बात होगी, यह सोचकर उसने मिठाई का दोना एक कोने में फेंक दिया।

दो- जब केशव 11-12 वर्ष के थे तब विद्यालय में इंग्लैण्ड के राजा एडवर्ड अष्टम् का राज्याभिषेक समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा था। केशव ने उसमें भाग नहीं लिया। उसने कहा- ''पराये राजा का राज्याभिषेक समारोह मनाना हम लोगों के लिए घोर लज्जा की बात है।''

तीन- नागपुर के किले पर अंग्रेजों का झंडा यूनियन जैक लहराते हुए देखकर केशव को बड़ी बेचैनी होती थी। उनकी इच्छा थी कि वहां तो अपने देश का झंडा लहराना चाहिए। इसके लिए केशव के बाल मन ने किले तक सुरंग खोदने की योजना बनाई। अपने एक अध्यापक के खाली पड़े कमरे से अपने बाल मित्रों के साथ सुरंग खोदने का काम शुरु भी कर दिया था।

चार- जब केशव नीलसिटी हाईस्कूल में पढ़ रहे थे तब अंग्रेज सरकार ने 'रिले सर्क्यूलर'जारी कर विद्यार्थियों को भारत के स्वतंत्रता आंदोलन से दूर रखने का निर्देश दिया था। एक दिन विद्यालय निरीक्षक के आने पर केशव ने विद्यालय के छात्रों के साथ मिलकर ऐसी योजना बनाई कि निरीक्षक महोदय जिस भी कक्षा में गए, उस कक्षा में विद्यार्थियों ने उनका स्वागत 'वंदेमातरम्' के नारे से किया। इस कारण केशव हेडगेवार को उस विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया था।

पांच- केशव बलिराम हेडगेवार ने डॉक्टरी की शिक्षा कलकत्ता (आज का कोलकाता) जाकर वहां के नेशनल मेडिकल कॉलेज से प्राप्त करने का निर्णय इसलिए लिया था कि वहां के क्रांतिकारियों के संपर्क में आ सकें। वहां पुलिन बिहारी दास के नेतृत्व में 'अनुशीलन समिति' नामक क्रांतिकारियों के एक संगठन →

क्या कभी सोचा था?

क्या कभी सोचा था कि एक भारतीय कंपनी अमेरिका और फ्रांस जैसे दो विकसित देशों को इतना बड़ा खरीददारी का ऑर्डर देगी जिसके कारण अमेरिका में 10 लाख लोगों को रोजगार मिलेगा और वहां के राष्ट्रपति इस तथ्य की स्वयं सहर्ष घोषणा भी करेंगे।

भारत की विमान कम्पनी 'एयर इंडिया' ने 6 लाख 40 हजार करोड़ रुपयों में 470 नए हवाई जहाज खरीदने के लिए अमेरिका एवं फ्रांस से समझौता किया है। यह विश्व का अब तक का सबसे बड़ा 'विमान करार' है। अमेरिका और फ्रांस की विमान कंपनियां जो विमान भारत को देंगी, उनके इंजन व कई कलपुर्जे ब्रिटेन में बनाए जाएंगे। इसलिए इन तीनों देशों की सरकारें इस करार पर प्रसन्न हो रही हैं। माना जा रहा है कि यह करार वहां संभावित आर्थिक मंदी को टालने में सहायक हो सकता है। भारत में भी इस 'करार' के परिणामस्वरूप 5 लाख नौकरियां निर्मित होने की संभावना बताई जा रही है। इनमें एक लाख प्रत्यक्ष तथा 4 लाख अप्रत्यक्ष होंगी।

समाचार पत्रों ने लिखा है ' यह दिन विमानन इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा। यह विमान इतिहास की आज तक की सबसे बड़ी 'डील'(करार) है।' इस करार का भारत सहित अमेरिका, फ्रांस व ब्रिटेन के लिए कितना महत्व है इसका अंदाजा इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि फ्रांस के साथ करार पर हस्ताक्षर करने के समय भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों वर्चुअली उपस्थित थे। अमेरिका से हुए करार के बाद वहां के राष्ट्रपति जो बाइडेन ने बयान जारी कर बताया कि इस करार का अमेरिका के लिए कितना महत्व है। उन्होंने कहा, ''पीएम मोदी के साथ भारत-अमेरिका संबंध और गहरे होंगे। अमेरिका के 44 राज्यों में 10 लाख जॉब पैदा होंगे।'' ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक ने कहा कि इससे ब्रिटेन में भी रोजगार बढ़ेगा।

'हवाई यात्रा' क्षेत्र में भारत के बढ़ते कदम

भारत में हवाई यात्रा करने वालों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। 2022 में 47 प्रतिशत वृद्धि के साथ 12 करोड़ 32 लाख लोगों ने हवाई यात्रा की। जहां 2014 में देश के हवाई अड्डों की संख्या मात्र 74 थी वहीं 2022 में बढ़कर 140 हो गई है। 2025 तक 220 होने की संभावना है। 2014 में देश में 440 विमान थे, जो वर्ष 2022 में बढ़कर 710 हो गए तथा 2025 तक इनकी संख्या 1200 होने की संभावना है। इसके कारण (एविएशन) क्षेत्र में अगले दो वर्षों में रोजगार के भी लाखों नए अवसर निर्मित होंगे।

विदेशी दबदबा होगा कम

वर्तमान में हवाई यात्रा के क्षेत्र में गल्फ एयर, लुफ्तहांसा ओर सिंगापुर एयरलाइंस का दबदबा है। नए विमान मिलने से एयर इंडिया इन्हें चुनौती दे सकेगी। भारतवंशियों की अमेरिका एवं ऑस्ट्रेलिया ज्यादा आवाजाही रहने से इन दोनों रूटों पर एयर इंडिया बहुत मुनाफा कमा सकेगी।

और भी विमान हैं खरीदने

एविएशन कंसल्टेंसी फर्म सीएपीए के अनुसार अगले एक से दो वर्षों में भारतीय विमान कंपनियां 1500 से 1700 नए विमानों की खरीद का ऑर्डर दे सकती है। भारत की एक अन्य कंपनी इंडिगो भी शीघ्र ही 500 विमानों की खरीद का ऑर्डर दे सकती है। उम्मीद जताई जा रही है कि आने वाले 15 वर्षों में भारत विश्व का तीसरा सबसे बड़ा बाजार होगा।

→ से जुड़ कर क्रांतिकारी संगठन की कई गतिविधियों में सक्रिय रहे।

छः– महात्मा गांधी जी द्वारा चलाये गए 1921 के असहयोग आंदोलन की सफलता के लिए डॉ. हेडगेवार ने महाराष्ट्र के विदर्भ क्षेत्र का तूफानी दौरा कर लोगों को आंदोलन हेतु प्रेरित किया। उनके भाषणों को अंग्रेज सरकार ने 'राजद्रोह' माना और उन पर मुकदमा चलाया। न्यायालय में अपने बचाव में प्रखरतापूर्वक जो बातें उन्होंने रखी, उस पर न्यायाधीश ने कहा– उनका यह बचाव का बयान तो मूल भाषण से भी अधिक राजद्रोहात्मक है। डॉक्टर साहब को एक वर्ष के सश्रम कारावास की सजा दी गई।

सात– 1930 में गांधी जी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से पूर्व संघ की स्थापना हो चुकी थी। अतः इस आंदोलन में भाग लेने के लिए डॉक्टर जी संघ के सरसंघचालक का दायित्व डॉ.ल.वा.परांजपे को सौंपा और वे जंगल सत्याग्रह करते हुए गिरफ्तार किए गए। उन्हें 9 माह का कारावास दिया गया।

ये कुछ जीवन प्रसंग हैं डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार के। संघ भी ऐसा ही है। ●

लोक आस्था का सैलाब

कैला देवी का लक्खी मेला

राजस्थान राज्य के करौली जिले में त्रिकूट पर्वत के मध्य बने कैला देवी के मंदिर की ख्याति आज देश के दूर-दराज क्षेत्रों तक ही नहीं देश के बाहर भी है। करौली जिला मुख्यालय से 23 किलोमीटर दूरी पर कैला देवी का भव्य मंदिर स्थित है। यहीं पर प्रतिवर्ष कैला देवी का प्रसिद्ध लक्खी मेला लगता है। मंदिर का प्रबंध एक ट्रस्ट के माध्यम से होता है। ट्रस्ट व सरकार के सहयोग से मेले की सारी व्यवस्थाएं होती हैं। सरकारी आकड़ों के अनुसार प्रतिवर्ष 35-45 लाख श्रद्धालु मेले में आते हैं।

पौराणिक मान्यता

मान्यता है कि द्वापर युग में माता देवकी की कोख से जन्मीं योगमाया का अवतार 8वीं संतान (कन्या) जिसे कंस ने मार डालने का प्रयत्न किया था, वही योगमाया त्रिकूट पर्वत पर अवतरित हुई और कैलेश्वरी कहलाई। आगे चलकर कैला देवी के नाम से शक्तिपीठ के रूप में यह स्थान प्रसिद्ध हुआ। कुछ लोग इसे कलिया माता के नाम से भी बुलाते हैं।

ऐसा भी कहा जाता है कि त्रिकूट पर्वत पर नरकासुर राक्षस का आतंक था। जो गांव वालों को परेशान करता था। वहीं तपस्यारत बाबा केदार गिरी से गांव वालों ने विनती की तब उन्होंने अपनी तपस्या से देवी को प्रसन्न किया जिसके कारण राक्षस का वध हो सका। मंदिर के पास बहती काली सिल नदी स्थित एक बड़ी शिला पर आज भी राक्षस के पैरों के निशान देखे जा सकते हैं। यह स्थान दानव-दह (घाट)के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही माता के चरण चिह्न भी एक शिला पर स्पष्ट दिखाई देते हैं।

विशाल आयोजन

यहाँ चैत्र मास में शक्ति पूजा का विशेष महत्त्व है। होली के बाद (चैत्र मास की द्वादशी से) प्रारम्भ होने वाला कैला देवी का यह मेला 15 दिनों तक चलता है। जो अंग्रेजी माह के अनुसार मार्च-अप्रैल में आयोजित होता है।

इस बार यह लक्खी मेला 19 मार्च से प्रारंभ हो रहा है। मेले में राजस्थान के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, दिल्ली, हरियाणा एवं गुजरात से भी लाखों श्रद्धालु कैला देवी के दर्शनार्थ आते हैं। मेले में श्रद्धालु दर्शन से पूर्व श्रद्धालु काली सिल नदी में स्नान करते हैं।

इतिहास

मंदिर का इतिहास लगभग 1 हजार वर्ष पुराना है। मान्यता है कि राजा भोमपाल ने 1600 ई. में इस मंदिर को भव्य स्वरूप प्रदान किया। इतिहासकारों का यह मानना है कि वर्तमान में जो कैला गांव है, वह करौली यदुवंशी राजाओं के आधिपत्य में आने से पहले गागरोन के खींची राजपूतों के शासन में था। खींची राजा मुकन्ददास ने मंदिर की सेवा, सुरक्षा का दायित्व राजकोष पर लेकर नियमित भोग-प्रसाद व ज्योत की व्यवस्था की थी। राजा रघुदास ने प्रारंभ में लाल पत्थरों से नागर शैली में माता का मंदिर बनवाया। वर्तमान में यह संगमरमर से बना है।

मेले का आकर्षण

मेले का मुख्य आकर्षण शुरू के पांच दिन और अंतिम चार दिनों में देखने को मिलता है जब लाखों की संख्या में दूरदराज से श्रद्धालु नंगे पैर पदयात्रा एवं लम्बे-लम्बे ध्वज (निशान) लेकर लांगुरिया (भजन) गाते हुए आते हैं। नव-दम्पतियों का जोड़े से दर्शन करना, बच्चों का मुंडन संस्कार यहां की मुख्य परम्परा है। मेले के दौरान 24 घंटे भंडारे व ठहरने की व्यवस्था रहती है।

चरणबद्ध आते हैं यात्री

लक्खी मेले में प्रदेशों की मान्यता अनुसार यात्री आते हैं। चैत्र कृष्ण बारह से पड़वा तक के प्रथम चरण में अधिकतर उत्तर प्रदेश के यात्री होते हैं। द्वितीय चरण में नवरात्रा स्थापना से तृतीया तक दिल्ली व हरियाणा के यात्री, तीसरे चरण में चतुर्थी से छठ तक मध्यप्रदेश तथा धौलपुर क्षेत्र के लोग, चौथा चरण सप्तमी से नवमीं तक होता है इसमें गुजरात, मुम्बई व दक्षिण भारतीय राज्यों के सबसे अधिक यात्री आते है तथा अंतिम चरण में (दशमी से पूर्णिमा तक) राजस्थान भर से बड़ी संख्या में दर्शनार्थी आते हैं। हमारी लोक आस्था का प्रतीक है यह मेला।

कैसा है विग्रह स्वरूप

मंदिर के अंदर चांदी की चौकी पर सोने और चांदी के छत्र के नीचे दो मनोहारी विग्रह बने हैं। बांई ओर वाला विग्रह थोड़ा बड़ा है तथा मुंह थोड़ा तिरछा है, यही मातेश्वरी कैला मैया हैं। लोकमान्यता है कि एक भक्त ने जाते समय जल्दी लौटकर आने को कहा था, लेकिन किसी कारणवश वह नहीं आ सका इसलिए माँ उसके इंतजार में तिरछी देखती नजर आती है। दाहिनी ओर चामुण्डा माता हैं। माता के दरबार में अखण्ड देशी घी और तेल की ज्योत सदैव जलती रहती है। कैला देवी को धन की देवी महालक्ष्मी और चामुण्डा को राक्षसों व दुष्टों का संहार करने वाली देवी मां के रूप में यहां पूजा जाता है। मंदिर के सामने ही भैरों बाबा का एक छोटा मंदिर है। इसके पास ही लांगुरिया जी का मंदिर बना है। ऐसा कहते हैं कि लांगुरिया के भजन गाने से माता शीघ्र प्रसन्न होती हैं। माताजी को नारियल, लौंग-धूप, रोली, मेहंदी, पान, पताशा, हलवा-पूरी-चना आदि का प्रसाद चढ़ाते हैं। मनोकामना पूर्ण होने पर ध्वजा, छत्र, घंटा व माता जी की पोशाक चढ़ाते हैं।

सकल मनोरथ दायक

खाटू के बाबा श्याम का फाल्गुनी मेला

लखदातार की जय, तीन बाणधारी की जय, खाटू नरेश की जय जैसे उद्घोष और हाथों में केसरिया व सतरंगी निशान (ध्वज) लेकर फाल्गुन की मस्ती के साथ नाचते–झूमते हुए देश–विदेश के श्रद्धालु बाबा श्याम के फाल्गुनी मेले में बाबा के दरबार में हाजिरी लगाते हैं। इस वर्ष 22 फरवरी से प्रारंभ हुआ यह मेला 4 मार्च तक चला।

शेखावाटी के सीकर जिले में (रींगस से 18 किमी दूर) स्थित है बाबा श्याम का विशाल मंदिर। जहाँ महाबली भीम व हिडिम्बा के पौत्र एवं घटोत्कच व मोरवी के पुत्र वीर बर्बरीक का शीश विग्रह के रूप में स्थापित है। जबकि उनके धड़ की पूजा हिसार (हरियाणा) के एक गांव स्याहड़वा में होती है।

पौराणिक प्रसंग

खाटूश्याम जी की कथा महाभारत से जुड़ी है। खाटूश्याम जी का मूल नाम बर्बरीक है। अत्यधिक घुंघराले बालों के कारण उनका यह नाम पड़ा। बर्बरीक की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने तीन अजेय बाण दिए थे। जिसके कारण वे 'तीन बाणधारी' कहलाए। जिस समय महाभारत का युद्ध प्रारंभ हुआ, बर्बरीक ने माता से युद्ध में जाने की बात कही तो माता ने कहा कि तुम युद्ध में जो पक्ष कमजोर हो उसकी ओर से लड़ना। श्रीकृष्ण वीर बर्बरीक के प्रण को सुनकर विचलित हो गए। बर्बरीक के प्रण के कारण कौरव–पांडवों के संभावित नाश को श्रीकृष्ण भांप गए थे। बर्बरीक को रोकने के लिए उन्होंने उसकी परीक्षा लेने का निश्चय किया। श्रीकृष्ण ने ब्राह्मण वेश में प्रकट होकर बर्बरीक से कहा कि जिस पेड़ के नीचे मैं खड़ा हूँ क्या तुम एक ही तीर से उसके सभी पत्ते बींध सकते हो? इसी बीच श्रीकृष्ण ने पीपल का एक पत्ता अपने पैरों के नीचे छिपा लिया परन्तु जैसे ही बर्बरीक ने बाण छोड़ा, कृष्ण के दबाए हुए पत्तों सहित पेड़ का प्रत्येक पत्ता बिंध गया।

ब्राह्मण वेशधारी कृष्ण ने बर्बरीक से शीश दान की याचना की। बर्बरीक के आग्रह पर श्रीकृष्ण ने अपने विराट स्वरूप के दर्शन दिए। वीर बर्बरीक ने कृष्ण के कहने पर जनकल्याण, परोपकार और धर्म रक्षा के लिए अपने शीश का दान कर दिया। वह दिन फाल्गुन माह की द्वादशी का दिन था और वे तभी से 'शीश के दानी' कहलाए। बर्बरीक ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की कि वे महाभारत का पूरा युद्ध देखना चाहते हैं। श्रीकृष्ण ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर युद्ध भूमि के समीप एक पहाड़ी पर उनके शीश को सुशोभित किया जहाँ से बर्बरीक ने संपूर्ण युद्ध का दृश्य देखा। बर्बरीक की भक्ति से प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने वरदान दिया कि कलियुग में तुम मेरे 'श्याम' नाम से पूजे जाओगे और तुम्हारे भक्तों का सभी प्रकार का कल्याण होगा।

एक जनश्रुति के अनुसार एक गाय नियमित रूप से एक स्थान पर अपना दूध गिरा जाती थी। तत्कालीन राजा को इस संबंध में स्वप्न आया और उसी प्रेरणा से उस स्थान की खुदाई करवाई गई फलतः बर्बरीक का शिलारूप विग्रह निकला। बाद में एक भव्य मंदिर का निर्माण कर उस विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा की गई। जहाँ शिलारूप विग्रह निकला वहां आज भी श्याम कुण्ड बना है। कृष्ण जन्माष्टमी, जलझूलनी एकादशी, होली, बसंत पंचमी विशेष रूप से मंदिर परिसर में मनाए जाते हैं।

फाल्गुन मेला

फाल्गुन माह के शुक्ल पक्ष में होली से पूर्व लगने वाला मेला सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। मेले के दौरान देश भर से आए भजन गायक खाटू में बाबा श्याम को अपने गीतों से अनवरत रिझाते हैं। भक्तों के बड़े–बड़े दल पदयात्रा करते व श्याम प्रभु के जयकारे लगाते हुए खाटू की ओर उमड़ते हैं। मुंबई, सूरत, कोलकाता, पंजाब, हरियाणा, बड़ौदा, गुजरात आदि स्थानों से भी बड़ी संख्या में भक्तगण बाबा श्याम के दर्शनों के लिए आते हैं।

बाबा श्याम के कुछ प्रसिद्ध नाम

शीश के दानी, हारे का सहारा, तीन बाण धारी, लखदातार, नीला घोड़ा रा असवार, खाटू नरेश जैसे नामों से बाबा श्याम भक्तों के बीच लोकप्रिय हैं। मेले के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु निशान (ध्वज) चढ़ाते हैं। ऐसा कहा जाता है कि निशान भेंट करने से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

पवित्र श्याम कुण्ड

यह वह स्थान है जहां बाबा श्याम का विग्रह प्राप्त हुआ था। इसके पवित्र जल को आरोग्यकारक बताया है। फाल्गुन मेले में इस कुण्ड में स्नान करने से इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

देश–विदेश में पूजे जाते हैं बाबा श्याम

बाबा श्याम के प्रति आस्था का भाव ऐसा है कि श्रद्धालुओं ने ऑस्ट्रेलिया, थाईलैण्ड, म्यांमार, नेपाल में भी बाबा के भव्य मंदिर स्थापित कर रखे हैं। पाकिस्तान में बाबा श्याम के दो प्रसिद्ध मंदिर हैं। एक हैदराबाद और दूसरा कराची में है।

इस वर्ष मेले में श्रद्धालुओं के लिए दर्शन हेतु 14 पंक्तियों की व्यवस्था थी, जिससे 3 से 5 मिनट ही दर्शन के लिए इंतजार करना पड़ा। ड्रोन व सीसीटीवी कैमरों से पूरे मेला क्षेत्र पर निगरानी रखी गई। ●

– मनोज गर्ग

उदयपुर

बंजारा बालक–बालिका के लिए निःशुल्क अध्ययन व्यवस्था

उदयपुर की बंजारा बस्ती (सेक्टर 5) में इस समुदाय के बच्चों को संस्कारित करने तथा उनके अध्ययन हेतु 'बाल संस्कार केन्द्र' का आरंभ किया गया है। इस केन्द्र में बंजारा समाज के बच्चों को निःशुल्क अध्ययन कराया जाएगा। इस कार्य की पहल घुमंतू जाति बन्धुओं के कल्याण हेतु सक्रिय 'घुमंतू जाति उत्थान न्यास' द्वारा की गई है।

इस अवसर पर समुदाय के 37 बालक–बालिकाओं ने पंजीकरण कराया। बच्चों के साथ उनकी माँ भी उपस्थित थीं। विशेष बात यह भी है कि इस केन्द्र का संचालन बंजारा समाज की ही एक बेटी, जिसने बीएड उत्तीर्ण कर रखी है, द्वारा किया जाएगा। सह प्रांत प्रमुख घुमंतू कार्य श्री पुष्कर लोहार ने बताया कि इस अवसर पर कई गणमान्य सेवाभावी व्यक्ति उपस्थित थे।

उदयपुर में पिछले दिनों ढकली गांव में बागरी समुदाय के लिए ऐसा ही संस्कार केन्द्र आरंभ हो चुका है। घुमंतू उत्थान न्यास के नरेश नागदा के अनुसार न्यास शीघ्र ही रंगास्वामी, कालबेलिया, गाडिया लुहार आदि के लिए भी बाल संस्कार केन्द्र की शुरुआत करेगा।

बारां

संघ के स्वयंसेवकों की सार्थक पहल

वाल्मीकि बेटी के विवाह में भरा भात, मकान के गृह–प्रवेश पर किया अखण्ड रामायण का पाठ

जाति–भाषा, क्षेत्र, मत–संप्रदाय, छोटा–बड़ा और अमीर–गरीब आदि नामों से बिखरे समाज को एकजुट करने में निरंतर प्रयासरत है संघ। संघ के स्वयंसेवकों की ओर से ऐसे ही दो उदाहरण पिछले दिनों बारां जिले में देखने को आए।

एक– शहर के हाउसिंग बोर्ड, गोदियापुरा में वाल्मीकि समाज के सुरेश नरवाल की पुत्री रचना के विवाह में संघ के स्वयंसेवकों की ओर से भात के समय पहरावनी, मंगलसूत्र और थाली में 51 हजार रुपये नकद दिए गए।

दो– मुरली मनोहर मंदिर के पास वाल्मीकि सेवा बस्ती में विशन जेदिया के नए मकान के गृह–प्रवेश के अवसर पर स्थानीय स्वयंसेवकों ने अखण्ड रामायण पाठ का कार्यक्रम रखा। कार्यक्रम के पश्चात् सभी ने सहभोज किया। जिला संघचालक डॉ.राधेश्याम गर्ग ने बताया कि उक्त दोनों घटनाक्रम समाज में सकारात्मक परिवर्तन का सूचक है।

गंगाशहर

बच्चों में समाज के वंचित–शोषित वर्ग की सहायता का संस्कार देने का प्रयास

विद्या भारती के आदर्श विद्या मंदिरों द्वारा विद्यार्थियों में बचपन से ही समर्पण भावना के विकास व समाज के वंचित, शोषित, पीड़ित लोगों की सहायता के लिए आगे आने के संस्कार दिए जाते हैं। इसी उद्देश्य से गंगाशहर के विद्यालयों में प्राकृतिक आपदा क्षेत्रों व जनजातीय शिक्षा हेतु सेवा निधि 1,75,000 रूपए एकत्र कर भेजे गए।

बड़ी सादड़ी

दीपों से बनाया अखंड भारत का नक्शा

सब भेदभाव मिटाकर बनाए भारत को पुनः अखंड

सेवा भारती द्वारा वाल्मीकि बस्ती में भारत माता पूजन कार्यक्रम किया गया, जिसमें अखंड भारत का मानचित्र 251 दीपकों द्वारा बनाया गया और सामूहिक रूप से भारत माता की आरती की गई।

वक्ताओं ने उपस्थित समुदाय को याद दिलाया कि विदेशी आक्रांताओं के आगमन से देश में छुआछूत व भेदभाव जैसी कुप्रथाएं आयी थीं। अब हम सभी आपसी भेदभाव को भुलाकर आगे बढ़ते हुए इस खंडित भारत को अखंड बनाने की दिशा में कार्य करें।

सांगानेर में हुआ 'शिवराज–2023' का आयोजन

स्वयंसेवकों ने नियुद्ध, यष्टि, योग, व्यायाम, संचलन आदि का प्रदर्शन कर मोहा दर्शकों का मन

फोटो – राजेश कुमावत

बीती 19 फरवरी को सांगानेर स्टेडियम में संघ के सांगानेर महानगर के स्वयंसेवकों ने दंड योग, दंडयुद्ध, नियुद्ध, यष्टि, व्यायाम योग, आसन, पद–विन्यास, पथ संचलन, घोष आदि का सामूहिक प्रदर्शन कर उपस्थित लोगों का मन मोह लिया। क्षेत्र के लोगों को बहुत समय पश्चात् शारीरिक के इतने सारे प्रयोग अनुशासन व लयबद्धता के साथ देखने को मिले। वस्तुतः प्रतिदिन लगने वाली शाखाओं पर स्वयंसेवक जो प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं उसकी एक झलक स्वयंसेवकों ने कार्यक्रम में प्रस्तुत की थी।

अवसर था महाराजा छत्रपति शिवाजी जयंती पर आयोजित 'शिवराज–2023' समारोह का। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के नाते बोलते हुए सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के पूर्व आईजी श्री नरेन्द्र कुमार गुर्जर ने संघ के स्वयंसेवकों की देश के प्रति निष्ठा की सराहना की तथा कहा कि आज संघ कार्य की ज्यादा आवश्यकता है। उन्होंने उपस्थित नागरिकों से अपने बच्चों को शाखा में भेजने के लिए आग्रह भी किया। जयपुर प्रांत के कार्यवाह श्री गेंदालाल ने

छत्रपति शिवाजी के कुछ जीवन प्रसंगों की चर्चा करते हुए कहा कि शिवाजी का जीवन हम सभी को आगे बढ़ने और विपरीत परिस्थितियों में भी काम करने की प्रेरणा देता है। उन्होंने 'देश प्रथम' मानकर कार्य करने का आग्रह किया तथा बताया कि संघ शताब्दी वर्ष तक संघ कार्य के विस्तार हेतु सैकड़ों स्वयंसेवक अपना दो वर्ष का पूरा समय दे रहे हैं। ऐसे कुछ कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण वर्ग खण्डेला धाम पर लगाया गया था।

इस अवसर पर बड़ी संख्या में सांगानेर क्षेत्र के नागरिक उपस्थित थे। माता–बहिनों की संख्या भी अच्छी–खासी दिखाई दी। सांगानेर विभाग संघचालक डॉ.रामकरण शर्मा, महानगर संघचालक श्री सत्यनारायण साहू तथा सह महानगर संघचालक श्री दुष्टदमन सिंह भी मंच पर विराजमान थे।

भागवत जी ने बेणेश्वर धाम में की पूजा

भेमई में ग्रामीणों द्वारा भाव–भीना स्वागत

सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने 24 फरवरी को डूंगरपुर (राजस्थान) के बेणेश्वर धाम पहुँचकर मंदिर में दर्शन किए तथा पूजा अर्चना की। उनके साथ जनजाति समाज के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। बाद में भागवत जी ने बेणेश्वरधाम के पीठाधीश्वर पूज्य महंत स्वामी अच्युतानंद जी महाराज के साथ भेंट व चर्चा की। बेणेश्वरधाम से भागवत जी भेमई पहुँचे जहां उनका भाव–भीना स्वागत ग्राम विकास समिति तथा ग्रामवासियों द्वारा परंपरागत वाद्य यंत्रों के साथ किया गया। महिलाओं ने कलश यात्रा निकाली। महिला समिति द्वारा आयोजित गौ पूजन में सरसंघचालक जी ने गौ माता को अपने हाथ से गुड़ खिलाया।

भेमई गांव में अखिल भारतीय ग्राम विकास–प्रभात ग्राम मिलन समारोह आयोजित हो रहा है। वहां पर राजस्थान के प्रभात ग्राम कार्यों को दर्शाने वाली एक प्रदर्शनी भी लगाई गई है।

छत्रपति शिवाजी जयंती पर भगवा रैली, झांकी, तलवारबाजी आदि का आयोजन

अजमेर के महाराष्ट्र मंडल और छत्रपति शिवाजी सेवार्थ समिति ने शिवाजी जयंती (19 फरवरी) पर भगवा रैली तथा सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया। शिवाजी का अफजल खां से हुए युद्ध को भी नाटिका के माध्यम से रैली में स्थान–स्थान पर प्रस्तुत किया गया। भगवा रैली में अश्वारूढ़ शिवाजी व उनके जीवन संबंधी झांकी के साथ ही तलवारबाजी, लाठी संचालन, लेजियम नृत्य (महाराष्ट्र का लोकनृत्य), आगबाजी के प्रयोग प्रमुख आकर्षण रहे। कार्यक्रम को मुख्य वक्ता श्री पृथ्वीसिंह भोजपुरा एवं अध्यक्ष श्री श्यामसुंदर शरण देवाचार्य (महंत, नरसिंह मंदिर, होलीदड़ा) ने संबोधित किया।

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तितरड़ी (उदयपुर)

पेड़ों को उखाड़ो मत, केवल निहारो

जन्मदिन, विवाह उत्सव आदि पर करें पौधारोपण

राजस्थान क्षेत्र में चल रहे अभियान 'बीजारोपण से वृक्षारोपण' के अंतर्गत तितरड़ी (उदयपुर) के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में 'एक पेड़ देश के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। उदयपुर के श्री गणपत लोहार ने पौधों का महत्व बताते हुए विद्यार्थियों और अभिभावकों से आग्रह किया कि जन्मदिन, विवाह उत्सव व अन्य आयोजनों पर पेड़-पौधे लगाए जाने चाहिए। उन्होंने कहा- पेड़ों को उखाड़ो मत, पौधों को केवल निहारो। विद्यालय में 'स्टूडेंट पुलिस कैडेट (एसपीसी)' और विद्यालय के छात्रों के साथ पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया गया।

एक बर्थ डे (जन्मदिन) ऐसा भी

केक काटकर मोमबत्तियाँ बुझाना आमतौर पर यही चलन है आज की पीढ़ी के जन्मदिन मनाने का। इससे इतर जालोर शहर में एक ऐसा विद्यालय भी है जहां जन्मदिवस मनाने का एक अलग ही तरीका है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, रेवत के स्कूल परिसर में भारत माता का नक्शा बना है, जिस विद्यार्थी का जन्मदिन होता है वह जिस साल में प्रवेश कर रहा होता है, उतने दीपक उस नक्शे के चारों ओर जगमग किए जाते हैं। इसके साथ विद्यालय के अन्य छात्रों द्वारा सामूहिक रूप से मंगल श्लोक का उच्चारण किया जाता है। कक्षा में पहुँचने पर सहपाठियों द्वारा तिलक लगाकर उस छात्र को बधाई दी जाती है। इस प्रेरक पहल के प्रेरणास्रोत विद्यालय के व्याख्याता संदीप जोशी हैं इन्होंने विद्यार्थियों के बस्ते का बोझ कम करने, स्कूल में कन्या पूजन जैसे 35 से अधिक नवाचार शुरु किए हैं।

चतुर्थ पुण्यतिथि (3 मार्च, 2023)

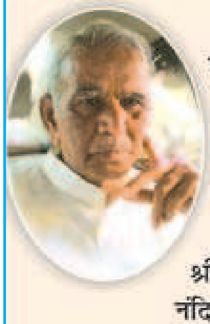

स्व. ओमप्रकाश जी वशिष्ठ

(पूर्व जिला कार्यवाह, भरतपुर)

आपके द्वारा राष्ट्र, समाज व धर्म के लिए जीवन पर्यन्त किए गए कार्य निरन्तर हमें प्रेरणा देते रहेंगे।

श्रद्धानवत

श्रीमती प्रभा, पवन, संजय, गौरीश, केशव नंदिनी एवं समस्त परिवारजन तथा स्वयंसेवक

चित्तौड़गढ़

पॉलीथीन मुक्त करने का चल रहा है अभियान

चित्तौड़गढ़ को स्वच्छ करने में जुटे हैं स्वयंसेवक

दुकानदारों को फूल भेंट कर किया जा रहा है सहमत

भारत के ऐतिहासिक दुर्ग चित्तौड़गढ़ को प्लास्टिक, पॉलीथीन और कचरा मुक्त कर स्वच्छ-साफ करने का एकल अभियान इन दिनों चलाया जा रहा है। संघ की पर्यावरण संरक्षण गतिविधि की प्रेरणा से चल रहे एकल-अभियान द्वारा विगत 28 जनवरी को दुर्ग के अंदर कालिका माता मंदिर परिसर और आसपास के क्षेत्र को स्वयंसेवकों द्वारा पॉलीथीन मुक्त किया गया तथा वहां से कचरा हटाया गया।

वहां प्रसाद का व्यापार करने वाले लोगों को गुलाब का पुष्प देकर पॉलीथीन में प्रसाद नहीं देने का आग्रह किया तथा प्रसाद के लिए कपड़े या कागज की थैली या फिर बांस की टोकरी का उपयोग करने का सुझाव दिया, जिसका अनुपालन करने का दुकानदारों ने भरोसा दिलाया।

पर्यावरण संरक्षण की चेतना जाग्रत करने के लिए फरवरी माह में साइकिल यात्रा की योजना भी बनी है। प्रांत संयोजक श्री धर्मपाल गोयल ने इस अवसर पर 'एक पेड़ राष्ट्र के नाम' अभियान की चर्चा की।

श्रद्धांजलि

नहीं रहे विहिप के खेमचंद शर्मा

विश्व हिंदू परिषद के गौरक्षा विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख श्री खेमचंद शर्मा का बीती 9 फरवरी को निधन हो गया। वे 68 वर्ष के थे। श्री शर्मा 1976 में संघ के प्रचारक बने। 1990 से वे विश्व हिंदू परिषद का कार्य देख रहे थे। 1997 में जम्मू-कश्मीर के प्रांत संगठन मंत्री, सह क्षेत्र संगठन मंत्री जैसे अन्य दायित्वों का निर्वहन किया। वर्ष 2005 से केन्द्रीय मंत्री (मठ-मंदिर विभाग) के रूप में कार्य देख रहे थे। वर्तमान में आप परिषद की योजना से अखिल भारतीय गौरक्षा विभाग के प्रमुख थे। पाथेय कण परिवार आपको श्रद्धासुमन अर्पित करता है।

काशी शब्दोत्सव–2023

भारत माता पहले से अधिक चैतन्ययुक्त हो रही है-आरिफ मोहम्मद

वाराणसी में आयोजित 'काशी शब्दोत्सव–2023' के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए केरल के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद ने कहा है कि भारत जितना शक्तिशाली बनेगा, पूरे विश्व और मानवता को उतना ही ज्यादा लाभ होगा। उन्होंने कहा कि भारत माता में एक बार फिर नई चेतना पैदा हो रही है। वह पहले से अधिक प्रभावशाली और वैभवशाली दिखाई दे रही है।

श्री आरिफ मोहम्मद ने कहा कि भारतीय संस्कृति ने मानव को दिव्यता से परिपूर्ण बनाया है। भारत की संस्कृति आदिकाल से ज्ञान आधारित है। जो नष्ट न हो सके वह शब्द और अक्षर है।

आने वाला समय भारत का : संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख श्री सुनील आंबेकर ने इस अवसर पर कहा कि आने वाला समय भारत का है। भारत किस ओर जा रहा है, इस पर मंथन होना जरूरी है। भारतीय ज्ञान के प्रकट होने का यही उचित समय है। भारत के विकास के लिए हर संभव प्रयत्न करना होगा।

काशी शब्दोत्सव–2023 का आयोजन विगत 10 से 12 फरवरी तक किया गया। शब्दोत्सव में प्रसिद्ध गीतकार मनोज मुंतशिर ने कहा कि इन दिनों हिंदू समाज को बांटने का प्रयास हो रहा है, इसे रोकना होगा।

ईसाई युवाओं ने भी कहा-

रामलला के दर्शन कर धन्य हुए

नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम आदि पूर्वोत्तर के ईसाई युवक–युवतियों सहित 35 विद्यार्थियों के एक दल ने अयोध्या में रामलला के दर्शन किए। युवाओं के उद्गार थे कि प्रभु राम के दर्शन कर धन्य हुए। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें यहां आने का अवसर मिला।

नागालैंड के रेन थांग ने कहा कि मुझे पहले से भगवान राम और मंदिर के बारे में जानकारी नहीं थी। हम तो देश घूमने निकले थे। अयोध्या आकर भगवान राम के बारे में जानकारी मिली। मन पुलकित हो उठा। चाहे जिस धर्म के इष्ट हों, उनका मंदिर भव्य रूप से बनना ही चाहिए।

मणिपुर के पी सिनराई के भी कुछ ऐसे ही उद्गार थे। दर्शन करने वाले कुछ अन्य ईसाई युवाओं ने कहा कि हम भले ही ईसाई हैं, परंतु उससे पहले भारतीय हैं।

ये सभी युवा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के संयोजन में 'राष्ट्रीय एकात्मकता यात्रा' के अंतर्गत अयोध्या पहुँचे थे।

स्वावलम्बी भारत अभियान

देश के 350 से अधिक जिलों में रोजगार सृजन केन्द्र की शुरुआत

स्वरोजगार से ही शत–प्रतिशत रोजगार की उपलब्धता के उद्देश्य को लेकर कार्य कर रहे स्वदेशी जागरण मंच द्वारा देशभर में 350 से अधिक जिलों में रोजगार सृजन केन्द्र की शुरुआत हो गई है।

मंच के राष्ट्रीय संगठक श्री कश्मीरी लाल का कहना था कि अब तक 5 हजार से अधिक उद्यमियों का सम्मान, 5 लाख से अधिक युवाओं के साथ संवाद और बड़े स्तर पर (350) सृजन केन्द्रों का शुरू होना स्वावलंबी भारत की ओर बढ़ने की संकल्पना का प्रकटीकरण है। लघु उद्योग भारती के अ.भा.संगठन मंत्री श्री प्रकाश चंद्र का कहना था कि गांव की मांग को गांव से ही पूरी करने को लेकर शुरू हुए अभियान से देश को आत्मनिर्भर बनाने में संबल प्राप्त होगा।

शिशु (सीकर)

दुल्हन ही दहेज है, कहकर तिलक के 11 लाख लौटाए

शिशु (सीकर) के कर्ण सिंह शेखावत के पुत्र वीरेन्द्र सिंह का विवाह पिछले दिनों मण्डोर (जोधपुर) में हुआ। विशेष बात यह थी कि वधू पक्ष ने 11 लाख रुपये टीके की रस्म के तौर पर तोरण के समय जब दुल्हे के पिता को देने चाहे तो उन्होंने हाथ जोड़कर वधू पक्ष से कहा कि हमारे लिए तो दुल्हन ही दहेज है और टीके की रकम वापस लौटा दी। उल्लेखनीय है कि कर्ण सिंह क्रीड़ा भारती सीकर विभाग के संयोजक हैं। उन्होंने अपने बड़े पुत्र नरेन्द्र सिंह के विवाह में भी तिलक में 1 रुपया ही शगुन के रूप में लेना स्वीकार किया था। सभी लोगों ने कर्ण सिंह की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि यह बहुत ही श्रेष्ठ कार्य है जो सर्वसमाज के लिए प्रेरणादायक एवं अनुकरणीय है।

आवश्यक सूचना

आदरणीय बन्धुगण,
सादर जय श्रीराम।

भगवत् कृपा से आप सभी सपरिवार सानन्द होंगे।

पाथेय कण का इस वर्ष-विक्रम संवत् 2080 (2023-2024) का सदस्यता अभियान आप सबके अथक परिश्रम एवं पाठकों के सहयोग से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया होगा। इस अंक के बाद अगला अंक ही इस वर्ष का अंतिम अंक होगा।

अतः आप से आग्रहपूर्वक निवेदन है कि पाथेय कण के नए सदस्यों की हाथ से लिखी सूची की प्रतियाँ मार्च के अंतिम सप्ताह तक पाथेय कण कार्यालय में भिजवाने का कष्ट करें।

सॉफ्टवेयर में टंकण के लिए उनकी 1-1 प्रतियाँ आप रखकर टंकण कराते रहें जिससे अप्रैल प्रथम का नव वर्ष अंक सभी को समय से प्राप्त हो सके।

साथ ही वर्ष 2007 व 2008 के सदस्यों की सदस्यता के भी 15 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं अतः उनका भी नवीनीकरण कराने की व्यवस्था करेंगे ही।

इसी विश्वास एवं आशा के साथ।

आपका
माणकचंद
प्रबंध संपादक

'राष्ट्रीय तीर्थ' प्रताप गौरव केन्द्र, उदयपुर में शिवरात्रि पर शिव-विवाह की सजाई गई झांकी

ब्यावर जिले द्वारा सेदरिया रोड स्थित खेल स्टेडियम में आयोजित सामूहिक शारीरिक प्रदर्शन का कार्यक्रम

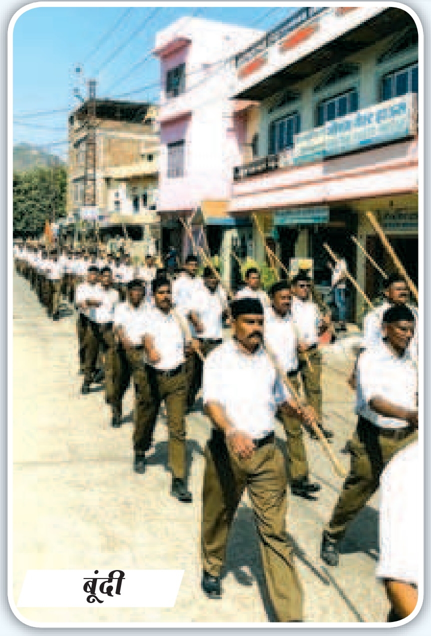

1. बीती 5 फरवरी को चित्तौड़गढ़ जिले में पिनाक 2023 नाम से निकला संचलन

गुणवत्ता युक्त पथ संचलन

2. बूंदी नगर में निकला गुणवत्ता युक्त पथ संचलन

राजस्थान विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के प्रोफेसर नन्द किशोर पांडेय विश्व हिन्दी सम्मेलन (फिजी, 15 से 17 फरवरी, 2023) में हिंदी भाषा के विकास में योगदान के लिए सम्मानित किये गए। प्रो. पांडेय का पाथेय कण को सहयोग मिलता रहा है।

गीता दर्शन

श्रीकृष्ण कहते हैं–

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (4/8)

हे अर्जुन ! साधु पुरुषों (सज्जन लोग) का उद्धार करने के लिए, पापकर्म करने वालों का विनाश करने के लिए और धर्म की अच्छी तरह से स्थापना करने के लिए मैं युग–युग में प्रकट हुआ करता हूँ।

आओ संस्कृत सीखें - 17

संस्कृत	हिंदी
● किं कर्तुं शक्यते?	क्या किया जा सकता है?
● किम् अहम् अन्तः आगन्तुं शक्नोमि?	क्या मैं अन्दर आ सकता हूँ?

अच्छी सेहत के लिए रहे प्रकृति के साथ

बच्चों के पूर्ण विकास के लिए खुले स्थान पर खेलना अहम है। जब बच्चे बाहर खेलते हैं तो उनकी पाँचों इन्द्रियाँ दृश्य, श्रव्य, स्पर्श, गंध और स्वाद का विकास सम्पूर्ण तरीके से होता है। वे अधिक कैलोरी बर्न करते है और मोटापे की आशंका घटती है। इसके अलावा मांसपेशियां और हड्डियां मजबूत होती हैं, विटामिन डी का पर्याप्त निर्माण होता है, जिससे गंभीर शारीरिक व मानसिक बीमारियों के होने का खतरा कम होता है।

– **डॉ.मुकेश बिरला,** एमडी (पीडियाट्रिक्स), इंदौर

गौरव के क्षण

● भारतीय मूल के नील मोहन दुनिया की सबसे बड़ी वीडियो साइट यू–ट्यूब के सीईओ के पद तक पहुँचे।

● संयुक्त राष्ट्र के सामाजिक विकास आयोग के 62वें सत्र के लिए यूएन में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिका कंबोज को अपना अध्यक्ष चुना है।

कुकिंग टिप्स

दूध को उबालते समय दूध के बर्तन पर लकड़ी का एक बड़ा चम्मच रख दें। दूध बर्तन से बाहर नहीं गिरेगा।

घरेलू नुस्खा

एक चम्मच शुद्ध गाय का घी, एक चम्मच पिसी शक्कर और चौथाई चम्मच पिसी काली मिर्च तीनों को मिलाकर सुबह खाली पेट और रात में सोते समय चाटकर ऊपर से एक कप गर्म दूध पीने से आंखों की रोशनी अच्छी रहती है।

विश्व वानिकी दिवस

(21मार्च)

विश्व स्तर पर पेड़ों का महत्व और वन संपदा का संरक्षण आदि उद्देश्यों को लेकर आम जन में व्यापक जागरूकता फैलाने के लिए प्रतिवर्ष 21 मार्च को विश्व वानिकी दिवस मनाया जाता है। वर्ष 1971 में यूरोपीय कृषि संगठन की 23वीं आम बैठक में इसे दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था।

विश्व जल संरक्षण दिवस

(22 मार्च)

विश्व के सभी प्राणियों को स्वच्छ व सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना तथा जल संरक्षण के महत्व की ओर सभी का ध्यान केन्द्रित करना 'विश्व जल संरक्षण दिवस' का उद्देश्य है। वर्ष 1993 में संयुक्त राष्ट्र की आम सभा में प्रतिवर्ष 22 मार्च को इसे दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया था।

जांचें कि आप कितने ज्ञानवान हैं?

नीचे दिए गए 10 प्रश्नों के उत्तर बताइए। अपना ज्ञान स्तर निम्नानुसार मानें – **सामान्य**– यदि आप 5 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **श्रेष्ठ**– यदि 8 प्रश्नों के सही उत्तर देते हैं। **उत्तम** – यदि सभी उत्तर सही देते हैं।

1. क्रांतिकारी शिवराम हरि राजगुरु को 23 मार्च को किस स्थान पर फांसी दी गई थी?
2. भारत के किस राज्य के एक जनपद (जिला) का नाम क्रांतिकारी उधम सिंह के नाम पर रखा गया है?
3. लाहौर की सेन्ट्रल जेल में भगत सिंह, राजगुरु के साथ फांसी चढ़ने वाले तीसरे क्रांतिकारी कौन थे?
4. 'इंडियन रिपब्लिकन आर्मी' की स्थापना करने वाले क्रांतिकारी का नाम बताइए?
5. अंग्रेजी सत्ता के विरोध में क्रांतिकारी करतार सिंह सराभा को फांसी का पुरस्कार मिला, उस समय उनकी आयु कितनी थी?
6. वो भारतीय क्रांतिकारी कौन थे जिन्होंने लंदन जाकर जनरल डायर को गोली मारी थी?
7. बनारस से निकलने वाली पत्रिका 'बंग वाणी' के सम्पादन का दायित्व किस क्रांतिकारी के पास था?
8. स्वतंत्रता के बाद योजना, बाल भारती और आजकल पत्रिकाओं के सम्पादन को देखने वाले क्रांतिकारी कौन थे?
9. अंग्रेजों के विरुद्ध महाराष्ट्र में 'रामोशी' नाम से क्रांतिकारी संगठन खड़ा करने वाले देशभक्त कौन थे?
10. सन् 1872 में सशस्त्र विद्रोह जिसे 'कूका विद्रोह' के नाम से जाना जाता है, के नेतृत्वकर्ता कौन थे?

उत्तर – पृष्ठ 18 पर

बोध कथा

कर्म की प्रधानता

संत रविदास जूते बनाते थे और संन्यासियों और महात्माओं की खूब सेवा किया करते थे।

उनकी सेवा से प्रसन्न होकर एक बार एक संत ने जाते समय उनसे कहा, ''मैं तुम्हें यह पारस पत्थर देना चाहता हूँ। अगर कोई लोहे की वस्तु इससे छू जाएगी तो वह सोना बन जाएगी।' उन्होंने पारस को उस लोहे की सुई से छुआ, जिससे रविदास जूते गाँठते थे। रविदास ने कहा, 'अब मैं जूते किससे बनाऊंगा?' संत ने कहा, 'अब तुम्हें जूते बनाने की क्या जरूरत है? जब भी पैसे चाहिए हों, इसको किसी लोहे की वस्तु से छुआ देना।' रविदास के मना करने पर भी संत यह कहते हुए पारस पत्थर उनके पास रख कर चले गए।

एक वर्ष बाद वही संत उसी रास्ते से गुजरे तो रविदास को जूते गाँठते देख बोले– 'तुम अभी भी जूते गाँठ रहे हो। मुझे उम्मीद थी कि तुम पारस पत्थर की मदद से अपना जीवन आराम से काट रहे होंगे।' रविदास ने उत्तर दिया, 'अगर मैं उस पत्थर का इस्तेमाल करने में लग जाता तो अपने कर्म से विमुख हो जाता। इसके बिना कोई भी व्यक्ति अपनी जीवन यात्रा पूर्ण नहीं कर सकता। निठल्ले बैठकर भोग करने से शरीर तो अस्वस्थ होता ही है, व्यक्ति ईश्वर की नजरों में भी गिर जाता है। कर्म करने से ही मनुष्य अपने लक्ष्य तक पहुँच पाता है।'

निम्नांकित उत्तर शीट भरकर इसी की फोटो वॉट्सएप करें। (बाल प्रश्नोत्तरी -35)

(कृपया अपनी पासपोर्ट साइज की फोटो भी वॉट्सएप करें)

1.(   ) 2.(   ) 3.(   )
4.(   ) 5.(   ) 6.(   )
7.(   ) 8.(   ) 9. (   )
10.(   )

नाम ....
पिता का नाम..............................
उम्र ...... पूर्ण पता ....
....
......................पिन........................
मोबाइल नं. ....

बाल प्रश्नोत्तरी -35

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! 16 फरवरी का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर शीट' में भरकर 79765 82011 पर वॉट्सएप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जाएंगे तथा प्रथम 5 विजेताओं की फोटो प्रकाशित कर उन्हें पुरस्कृत भी किया जाएगा। प्रतियोगिता में 6 से 17 वर्ष तक के बाल–किशोर ही भाग ले सकते हैं। **उत्तर भेजने की अंतिम तिथि – 20 मार्च, 2023**

1. **'श्रीरामचरितमानस ' महाकाव्य किसके द्वारा लिखा गया है?**
   (क) गोस्वामी तुलसीदास (ख) महर्षि वाल्मीकि (ग) कपिल मुनि (घ) आचार्य शंकर
2. **कांग्रेस के अधिवेशन में डॉ.हेडगेवार और सुभाष बाबू की भेंट किस स्थान पर हुई थी?**
   (क) दिल्ली (ख) कोलकाता (ग) महाराष्ट्र (घ) पंजाब
3. **जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में आशीष शर्मा की प्रदर्शित फिल्म कौन सी थी?**
   (क) लव जिहाद (ख) हिन्दुत्व (ग) अग्निपथ (घ) हकीकत
4. **भारतीय मूल के ब्रिटेन के वर्तमान प्रधानमंत्री का नाम बताइए?**
   (क) ऋषि सुनक (ख) बोरिस जॉनसन (ग) प्रीति पटेल (घ) डेविड कैमरान
5. **वर्ष 2002 में गुजरात के गोधरा में कितने रामभक्तों को जिंदा जला दिया गया था?**
   (क) 50 (ख) 59 (ग) 60 (घ) 65
6. **बारां जिले के किस ग्राम को आदर्श प्रभात ग्राम घोषित किया गया है?**
   (क) देवपुरा (ख) रूपपुरा (ग) नारायणपुरा (घ) कल्याणपुरा
7. **अल्पसंख्यकों के लिए भारत सबसे बेहतर देश है, यह रिपोर्ट किसने प्रकाशित की है?**
   (क) आउटलुक (ख) इण्डिया टुडे (ग) ऑस्ट्रेलिया टुडे (घ) फ्रंट लाइन
8. **पुणे के देहू में संत तुकाराम मंदिर का उद्घाटन प्रधानमंत्री श्री मोदी ने कब किया?**
   (क) 9 मार्च, 2022 (ख) 14 जून, 2022 (ग) 11 अप्रैल,2022 (घ) 15 मई2022
9. **जनजाति क्षेत्र में कार्यरत श्री मूलचन्द लोढ़ा को कौन सा सम्मान देने की घोषणा हुई है?**
   (क) पद्मश्री (ख) भारतरत्न (ग) पद्मभूषण (घ) पद्मविभूषण
10. **'ऑर्गेनिक फार्मिंग के पिता' के नाम से विख्यात तुलाराम उप्रेती किस राज्य से संबंध रखते हैं?**
    (क) हिमाचल प्रदेश (ख) सिक्किम (ग) अरुणाचल प्रदेश (घ) जम्मू–कश्मीर

बाल प्रश्नोत्तरी -32 के परिणाम

गणेश

राजेश्वरी

आदूराम

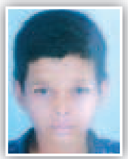
दीपक

भरत

1. गणेश पारीक, सरदारशहर, चुरू
2. राजेश्वरी राठौड़, सरवाड़, अजमेर
3. आदूराम सुथार, पचपदरा, बाड़मेर
4. दीपक रेगर, सांगोद, कोटा
5. भरत कुमावत, शाहपुरा, भीलवाड़ा
6. हनुमान माली, मालपुरा, टोंक
7. नवीन कुशवाह, राधानगर, भरतपुर
8. रूचिका कुमारी, सांचौर, जालोर
9. गरिमा अरोड़ा, श्रीगंगानगर
10. हार्दिक गोयल, उदयपुर

प्रथम 5 विजेताओं को पुरस्कार भेजे जा रहे हैं।

सही उत्तर 1.(क) 2.(क) 3.(ग) 4.(ख) 5.(घ) 6.(ख)7.(क) 8 (क) 9.(ग)10.(क)

उत्तर स्वातंत्र्य समर प्रश्नोत्तरी– 1. लाहौर 2. उत्तराखण्ड 3. सुखदेव 4. सूर्य सेन 5.19 वर्ष 6. उधम सिंह 7. राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी 8. मन्मथनाथ गुप्त 9. वासुदेव बलवंत फड़के 10. बाबा रामसिंह जी

राष्ट्रनायक सुभाष चन्द्र बोस

38

आलेख एवं चित्र
ब्रजराज राजावत

भारत के लिए यह विडम्बनापूर्ण स्थिति थी... एक तरफ सुभाष भारत की स्वतंत्रता के लिए विराट सेना संगठित कर चुके थे। जापान–जर्मनी जैसे राष्ट्र उन्हें पूर्ण सहयोग दे रहे थे, वहीं भारत में कांग्रेस अंग्रेजों के पक्ष में व आजाद हिन्द फौज के विरुद्ध खड़ी थी..

सुभाष युद्ध पूर्व की तैयारियों में जुटे थे...6 जुलाई को जापान के प्रधानमंत्री जनरल टोजो के साथ सेना की सलामी ली... करीब डेढ़ घंटे तक मार्च पास्ट होता रहा

9 जुलाई को ऐतिहासिक विशाल रैली म्युनिसिपल कार्यालय, सिंगापुर में हुई जिसमें करीब डेढ़ लाख लोगों ने सुभाष जी का स्वागत किया

स्वतंत्रता की इस लड़ाई के लिए सुभाष जी ने जन–धन का सहयोग मांगा तो त्याग व बलिदान का उत्साह उमड़ पड़ा... महिलाओं ने अपने आभूषण उतार कर ढेर लगा दिए

महिलाओं का उत्साह देखकर महिला रेजीमेंट की भर्ती शुरु की गई। रेजीमेंट का नाम रखा.. 'रानी झाँसी रेजीमेंट'

क्रमशः

पाक्षिक
पाथेय कण
1-15 मार्च, 2023
(25 फरवरी को प्रकाशित, पृष्ठ 20)

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर
(16 से 31 मार्च, 2023)
चैत्र कृष्ण 9 से चैत्र शुक्ल 10 तक, वि.सं.-2079-80

जन्म दिवस

चैत्र कृष्ण 9 (16 मार्च)	- भगवान आदिनाथ जयंती
21 मार्च (476)	- विश्वविख्यात खगोलशास्त्री आर्यभट्ट
चैत्र शुक्ल 1 (22 मार्च)	- डॉ.केशव बलिराम हेडगेवार जयंती
चैत्र शुक्ल 2 (23 मार्च)	- संत झूलेलाल जयंती (चेटीचण्ड)
23 मार्च (1858)	- क्रांतिकारी सूफी अम्बाप्रसाद
23 मार्च (1910)	- राममनोहर लोहिया जयंती
चैत्र शुक्ल 3 (24मार्च)	- भगवान मत्स्य जयंती
चैत्र शुक्ल 9 (30 मार्च)	- समर्थ गुरु रामदास जयंती
30 मार्च (1897)	- अप्पा जी जोशी जयंती
चैत्र शुक्ल 10 (31 मार्च)	- धर्मराज चित्रगुप्त अवतरण दिवस (धर्मराज दशमी)

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

20 मार्च (1858)	- रानी अवन्ती बाई लोधी का बलिदान
23 मार्च (1931)	- क्रांतिकारी भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु का बलिदान
25 मार्च (1931)	- गणेश शंकर विद्यार्थी का बलिदान
29 मार्च (1917)	- सरदार बलवंत सिंह सहित पांच क्रांतिकारियों का बलिदान

महत्वपूर्ण घटनाएं/अवसर

18 मार्च (1944)	- आजाद हिंद फौज का भारत के मणिपुर में प्रवेश
20 मार्च	- विश्व खुशहाली दिवस
21 मार्च	- विश्व वानिकी दिवस
चैत्र शु.1(22 मार्च)	- आर्य समाज की स्थापना, वर्ष प्रतिपदा
22 मार्च	- विश्व जल संरक्षण दिवस
24 मार्च	- विश्व टीबी दिवस (क्षय रोग)
27 मार्च	- विश्व रंगमंच दिवस
30 मार्च	- राजस्थान स्थापना दिवस

सांस्कृतिक पर्व/त्योहार

9 मार्च	- भाई दोज
15 मार्च	- शीतलाष्टमी (मेला शीलडूंगरी, चाकसू)
19 मार्च	- कैलादेवी (करौली) मेला प्रारंभ

पंचांग -चैत्र (कृष्ण-पक्ष)
युगाब्द-5124, वि.सं.-2079, शाके-1944
(8 से 21मार्च,2023)

भाई दोज (होली)-9 मार्च, **चतुर्थी व्रत**-11 मार्च, **रंग पंचमी**-12 मार्च , **रांधापुआ** -14 मार्च, **शीतलाष्टमी (बास्योड़ा)**-15 मार्च, **वर्षीतप प्रारम्भ (जैन)**-15 मार्च, **पापमोचिनी एकादशी व्रत**-18 मार्च, **प्रदोष व्रत**-19 मार्च, **पंचक प्रारम्भ**-19 मार्च (प्रातः 11.17 बजे), **चैत्री अमावस्या (देवपितृकार्य अमावस्या)**-21 मार्च

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 8 मार्च **सिंह** राशि में, 9-10 मार्च **कन्या** राशि में, 11-12 मार्च **तुला** राशि में, 13 से 15 मार्च नीच की राशि **वृश्चिक** में, 16-17 मार्च **धनु** राशि में, 18-19 मार्च **मकर** राशि में तथा 20-21 मार्च **कुंभ** राशि में गोचर करेंगे।

चैत्र कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** यथावत क्रमशः मीन व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी क्रमशः पूर्ववत मेष व तुला राशि में स्थित रहेंगे। **सूर्य** 14 मार्च को प्रातः 6.34 बजे तथा **बुध** 16 मार्च को प्रातः 10.47 बजे कुंभ से मीन राशि में प्रवेश करेंगे। **मंगल** 12 मार्च का प्रातः 5.02 बजे वृष से मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 12 मार्च को प्रातः 8.24 बजे मीन से मेष राशि में प्रवेश करेंगे।

जन्म दिवस शत शत नमन

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर
भगवान आदिनाथ
चैत्र कृष्ण 9 (16 मार्च)

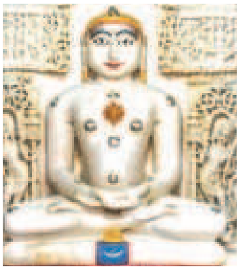

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत
समर्थ गुरु रामदास
चैत्र शुक्ल 9 (30 मार्च)

(1608-1681)

धर्मराज
चित्रगुप्त महाराज
चैत्र शु.10 (31 मार्च)

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 मार्च, 2023 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में